'' झारखण्ड में सबर आदिम जनजाति का सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति : एक भौगोलिक अध्ययन''

शोध प्रारूप

(पीएच.डी. उपाधि हेतु)

2023

विश्वविद्यालय (भूगोल विभाग)
सामजिक विज्ञान संकाय
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोध निर्देशिका
डॉ. शाशि कान्ता टोप्पो
असिस्टेंट प्रोफेसर (भूगोल विभाग)
राँची महिला महाविद्यालय, राँची

शोधार्थी
अरविन्द कुमार गुप्ता
एम.ए. यू.जी.सी.-नेट (जे.आर.एफ)

1. शोध शीर्षक का संक्षिप्त परिचय :

आदिवासी शब्द दो शब्दों 'आदि' और 'वासी' से मिल कर बना है और इसका अर्थ मूल निवासी होता है।[1] महात्मा गांधी ने आदिवासियों को गिरिजन (क्योंकि अधिकतर आदिवासी लोग जंगल और पहाड़ों पर निवास करने वाले लोग हैं, जो जल जंगल जमीन के सच्चे रखवाले हैं) कह कर पुकारा है। [2] भारतीय संविधान में आदिवासियों के लिए 'अनुसूचित जनजाति' पद का उपयोग किया गया है। भारत के संविधान के अनुसार, भारत राष्ट्रपति द्वारा एक सार्वजनिक अधिसूचना के जरिए अनुसूचित जनजाति के समुदाय घोषित किया जाता है।[3] इन जनजातियों के कुछ समुदाय को आदिम जनजाति के रूप में वर्गीकृत किया गया है। आदिम जनजाति समूहों की पहचान के लिए निम्नलिखित मापदंड हैं -

1. कृषि की पुरानी तकनीक,

2. साक्षरता का निम्नस्तर और

3. स्थिर या घटती हुई आबादी।[4]

सबर जनजाति में उपर्युक्त सभी विशेषता के आधार पर आदिम जनजाति के शामिल किया गया है। 2006 में उच्तम न्यायलय के एक फैसले के अनुसार आदिम जनजाति को पी.वी.टी. जी. ग्रुप के रूप में परिभाषित किया गया है। [5]

समूह में

झारखंड में सबर जनजाति वास्तविकता में अपने सांस्कृतिक धरोहर, जीवनशैली और जीविका के साथ जंगलों के संरक्षण और उनके स्वामित्व पर निर्भर हैं। यह एक समृद्ध जलवायु और वन्यजीव वाले क्षेत्र में बसे हुए हैं, जिसमें खास रूप से पूर्वी सिंहभूम जिलाशामिल है। इन

जनजातियों के पास धरोहरों के रूप में वनफूल, जड़ी-बूटियाँ, धातु और अन्य प्राकृतिक संसाधन हैं, जिन्हें वे अपने आजीविका के लिए उपयोग करते हैं।

इनका आर्थिक जीवन मजदूरी तथा वनों के फल-फूल पर आधारित है। इनकी जीवन शैली अभी आधुनिक सभ्यता से दूर के मानव जैसा ही है । "भारत में सबसे कम जनसँख्या वाली आदिम जनजातियों में से एक सबर है। ये झारखण्ड में मुख्य रूप से पूर्वी सिंहभूम एवं पश्चिमी सिंहभूम में पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त इनकी कुछ आबादी हजारीबाग, धनबाद, गिरिडीह, पलामू, रांची तथा संथाल परगना में भी पायी जाती है। [7]

2. अधतन स्थिति :

यूनेस्को के ‘वर्ल्ड एटलस ऑफ एनडेंजर्ड लैंग्वेजेज़' के अनुसार सबर आदिम जनजाति क संस्कृति, रहन-सहन और भाषा संकट में है ।

जनसंख्या एवं विस्तार

जनगणना (2011) के अनुसार सबर आदिम जनजाति की संख्या 8,688 है, जो झारखंड की आबादी का लगभग 0.028% है। झारखण्ड सरकार के कल्याण विभाग के अनुसार सबर जनजाति पूर्वी सिंहभूम में 7327, पश्चिम सिंहभूम में 440, पलामू में 5 परिवार, रांची में 15 परिवार, गिरिडीह में 6 परिवार, धनबाद में 8 परिवार और संथाल परगना के जिलों में 20 परिवार निवास करते हैं ।

झारखण्ड राज्य भारतीय उपमहाद्वीप के पूर्वी भाग में स्थित है। इसकी भौगोलिक स्थिति 21°58'10" से 25°19' उत्तरी अक्षांश तथा 83°19'50 से 87°57' पूर्वी देशांतर के मध्य है।

विशद कुमार 06 जुलाई, 2006 में फॉरवर्ड प्रेस में लिखें हैं कि "लखाईडीह में जंगलों और पहाड़ों के बीच गुफा में दो सबर परिवार रहते हैं। इनमें से एक लखाईडीह गांव का है और दूसरा दस साल पहले ओडिशा से झारखंड आया था। कोई सुविधा न मिलने की वजह से इनके मुखिया ने भी गुफा को ही अपना घर बना लिया और अपनी पत्नी, बच्चे और मां के साथ वहीं रहने लगा।”

अर्पिता सरकार 20 अक्टूबर, 2020, "द सबर ऑफ सिंहभूम " में लिखी हैं कि झारखंड के पूर्वी सिंहभूम जिले की जंगली पहाड़ियों में, शिकार इकट्ठा करने वाले सबर संकट और निराशा में रहते हैं। अदूरदर्शी, लाभ-संचालित मुख्यधारा के विकास प्रतिमान वन संसाधनों की कमी और वन्यजीव विलुप्त होने के केंद्र में है जिसने सबरों के जीवन को प्रभावित किया हैं। "

टाइम्स ऑफ इंडिया 6 दिसम्बर 2022 को लिखा है कि जमशेदपुर डीसी विजया जाधव पूर्वी सिंहभूम जिले के पोटका प्रखंड के खरियाकोचा गांव का दौरा की, जहां आदि जनजाति के लोग रहते हैं। डीसी और अन्य अधिकारियों ने रविवार को आदिवासी समूह के इन सदस्यों के बीच भोजन वितरित की और उनके साथ भोजन भी की। डीसी ने कहा कि इस यात्रा का मकसद इन लोगों के बीच विश्वास पैदा करना था। इन आदिवासी समूहों के कई लोग अपने गांव से बाहर नहीं जाते हैं और केवल कुछ मुट्ठी भर लोग ही जिला मुख्यालय जमशेदपुर गए हैं, जो 40 किमी से अधिक नहीं है। स्कूल जाना भी बहुत आम बात नहीं है और कुछ ही लोगों ने मैट्रिक तक पढ़ाई की है।

डॉ. रीना कुमारी ने अपने शोध पत्र “झारखण्ड की आदिम जनजातियों की आर्थिक दशाएं तथा नूतन परिवर्तन : एक भौगोलिक अध्ययन" में जनजातीय समुदाय में सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों को एक दुसरे के परस्पर सम्बंधित माना।

डॉ. श्रुति कुजुर ने अपने शोध पत्र "राची नगर स्थित पूर्ववर्ती जनजाति आर्थिक प्रतिरूप के बदलते स्वरुपः एक भौगोलिक अध्ययन" में जनजातियों के बदलते सामाजिक आर्थिक स्वरुप का मुख्य आधार जनजातियों के आर्थिक क्रियाकलाप को माना है।

3. अनुसंधान (जाँच) की जाने वाली समस्या : शोध समस्या की परिभाषा निम्न भूगोलवेत्ताओं ने निम्न प्रकार से दिए

मानव भूगोल के अंतर्गत सबर जनजाति की सामाजिक और आर्थिक स्थिति उपलब्ध साहित्य समीक्षा के आधार पर प्रस्तुत शोध कार्य में निम्नलिखित समस्या है-

i) अध्ययन के क्षेत्र में सन 2000 ईस्वी बाद सबर जनजाति की सामाजिक विकास के समक्ष आने वाली समस्याएँ क्या-क्या है?

ii) अध्ययन के क्षेत्र में सन 2000 ईस्वी बाद सबर जनजाति की आर्थिक विकास के समक्ष आने वाली समस्याएँ क्या-क्या है?

iii) अध्ययन के क्षेत्र में सन 2000 ईस्वी बाद सबर आदिम जनजाति के समावेशी विकास के बाधक कौन सी है?

4. अनुसंधान और प्रेरणा के उद्देश्य : शोध समस्याओं की विविधता अधिक है इसके चार प्रमुख उद्देश्य होते हैं- सैद्धान्तिक उद्देश्य, तथ्यात्मक उद्देश्य, सत्यात्मक उद्देश्य तथा व्यावहारिक उद्देश्य है-

प्रस्तुत शोध कार्य के निम्न उद्देश्य है-

i) अध्ययन के क्षेत्र में सबर आदिम जनजाति की सन 2000 ईस्वी से वर्तमान तक की सामाजिक स्थिति का अध्ययन करना।

ii) अध्ययन के क्षेत्र में सबर आदिम जनजाति की सन 2000 ईस्वी से वर्तमान तक की आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना ।

iii) सबर आदिम जनजाति के क्षेत्रीय समस्याओं के समाधान और समाज के मुख्य धारा में लाने हेतू नवीन ज्ञान का विकास करना ।

5. शोध परिकल्पना या अनुसंधान प्रश्न : अनुसंधान कार्य परिकल्पना के निर्माण और उसके परीक्षण के बीच की प्रक्रिया है। परिकल्पना के निर्माण के बिना न तो कोई प्रयोग हो सकता है और न कोई वैज्ञानिक विधि के अनुसन्धान सम्भव है। वास्तव में परिकल्पना के अभाव में अनुसंधान कार्य एक उद्देश्यहीन क्रिया है।

प्रस्तुत शोध में निम्न शोध परिकल्पनाएं है-

i) सबर आदिम जनजाति के सामाजिक विकास की अत्यधिक संभावनाएं हैं।

ii) सबर आदिम जनजाति के आर्थिक विकास की अत्यधिक संभावनाएं हैं।

iii) सबर आदिम जनजाति को शैक्षिक विकास कर उन्हें सामाज के मुख्य धारा में शामिल करने की अपार संभावनाएं हैं।

6. अनुसंधान की रुपरेखा (अभिकल्प) तथा पद्धति :

शोधकर्ता प्रस्तुत शोध में प्राथमिक और द्वितीयक दोनों प्रकार के डाटा का उपयोग करते हुए गुणात्मक एवं मात्रात्मक विश्लेषण उपागम विधि तन्त्र को अपनाएगा। भौगोलिक अध्ययन के तुलनात्मक व्याख्या हेतु साहित्यिक स्रोतों का भी उपयोग में लाएगा। प्राथमिक आकड़ें के रूप में स्वंय कोल्हान प्रमंडल में सबर जनजाति के गाँव जाकर उनकी सामाजिक एवं आर्थिक बदलाव का अध्ययन करेगा। जैसे सबर जनजाति के बुजुर्गों से सबर जनजाति की सामाजिक परिवर्तन की जानकारी एवं गाँव के आंगनबाड़ी सेविका से उनकी आर्थिक स्थिति की जानकारी

इकट्ठा करेगा और द्वितीय आंकड़ा के रूप मे NSSO के आँकड़े, जनजाति एवं संस्कृति मंत्रालय, डॉ. रामदयाल मुंडा जनजातीय कल्याण शोध संस्थान तथा झारखंड सरकार के कल्याण विभाग से साबर जनजाति की सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन की जानकारी इकट्ठा करेगा और अंतिम निष्कर्ष पर पहुंचेगा। शोधकर्ता का यह शोध कार्य विश्लेषणात्मक एवं वर्णात्मक प्रवृति का होगा।

6 A. संभावित अध्यायीकरण

- परिचय
- प्रथम अध्याय - भौगोलिक पृष्ठभूमि,
- द्वितीय अध्याय - जनांकिकीय विशेषता एवं जनसंख्या संरचना
- तृतीय अध्याय - सामाजिक एवं आर्थिक स्वरुप
- चतुर्थ अध्याय - प्रतिदर्श अध्ययन
- पंचम अध्याय - विकास स्तर में क्षेत्रीय विषमताएं, समस्याएँ एवं संभावनाएं
- षष्टम अध्याय - जनसँख्या में कमी के कारण
- सप्तम अध्याय - स्वास्थ्य समस्या
- अष्टठम अध्याय - सबर जनजातियों के विकास हेतु संचालित सरकारी योजनाएं
- निष्कर्ष
- संदर्भ सूची
- परिशिष्ट

7. आंकड़ो के स्रोत तथा आंकड़ा संग्रह् मे उपयोग की जाने वाले उपकरण : अध्ययन की इकाई

शोधकर्ता प्रस्तुत शोध में झारखण्ड के पूर्वी सिंह्भूम, पश्चिमी सिंह्भूम, पलामू, ह्जारीबाग, गिरिडीह, रांची और धनबाद के सबर जनजाति के निवास वाले प्रत्येक परिवारों का शोध का इकाई बनाएगा। यह चयन यादृच्छिक प्रतिचयन द्वारा होगा।

सुचना दाता का चयन

शोध कार्य के लिए शोध कर्ता गाँव के सबर परिवार के मुखिया तथा अन्य सुचना दाता के रूप में गाँव के सम्मानित एवं सामाजिक राजनितिक, प्रशासनिक तन्त्र में सम्मलित व्यक्तियों को चयन करेगा।

प्रतिदर्श आकर

शोधकर्ता झारखण्ड के सबर आदिम जनजाति निवास वाले जिले को चयनित झारखण्ड पूर्वी सिंह्भूम, पश्चिमी सिंह्भूम, पलामू, ह्जारीबाग, गिरिडीह, रांची तथा धनबाद के 5-5 ब्लोकों के 5-5 गावों से प्रतिदर्श आकर के रूप में 10-10 परिवारों का चयन करेगा।

सबर आदिम जनजाति के निवास स्थान

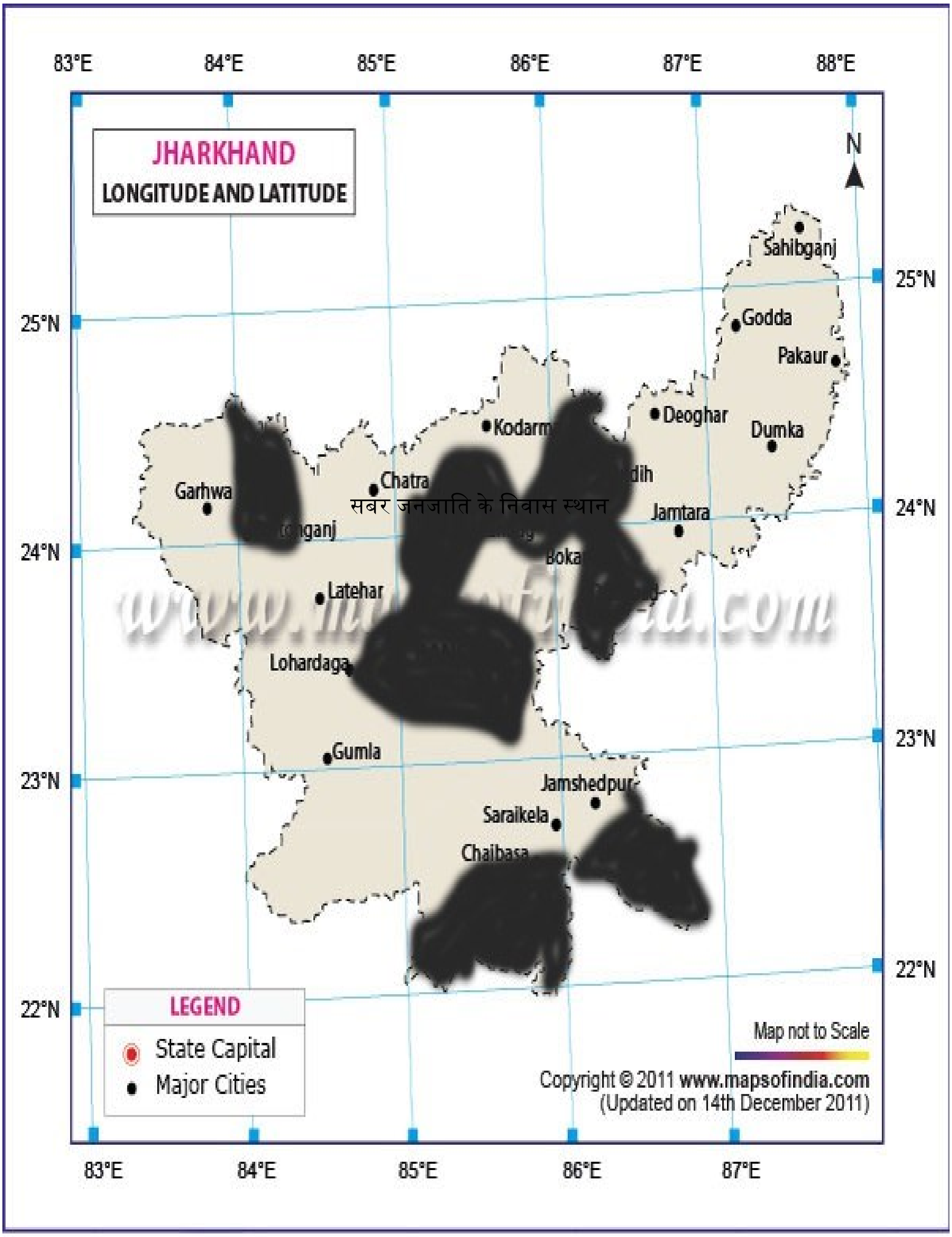

Source-Dr. V S Upadhyay, ‘‘Hillkhariya’’

8. आंकड़ा विश्लेषण :

आंकड़ा का विश्लेषण मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों प्रकार से किया जाएगा। सबर जनजाति के प्रत्येक परिवारों के मुखिया से प्राप्त सुचना के मात्रात्मक विश्लेषण के लिए एक तालिका बनाया जाएगा। गुणात्मक विश्लेषण में प्राप्त प्रश्नावली को संकलित किया जाएगा इसके बाद संगठित और इसके एक एक तथ्य को विश्लेषण किया जाएगा।

9. अध्ययन का महत्व :

यह अध्ययन वर्तमान समय में आदिम जनजातियों सबर की मूल संस्कृति जो कि प्रकृति पर आधारित है, के विलुप्त होने और इसके मूल कारण को उजागर करने पर होगा। इस संस्कृति के संरक्षण एवं विकास में महत्पूर्ण साबित होगा और साथ ही उनकी रहन-सहन को विश्व पहचान दिलाने तथा भारत की पर्यावरण संरक्षित सभ्यता को विश्व स्तर पर पहचान दिलाने में महत्पूर्ण साबित होगा। इसके परिणाम स्वरूप एक बार फिर भारत अपनी मूल सभ्यता पर गौरवान्वित होगा।

10. वर्तमान समय की समस्या और समाज की आवश्यकता में इसकी प्रासंगिकता:

भारत में अब तक 95 पी. वी. टी. जी. आधिकारिक रूप से अधिसूचित हैं। झारखण्ड में 8 जनजातियों को पी. वी. टी. जी. के रूप में अधिसूचित किया गया है उनमे से एक सबर जनजाति भी शामिल हैं। 2011 के जनगणना के अनुसार सबर जनजाति की झारखण्ड में कुल जनसंख्या 8,688 है जो की झारखण्ड की कुल आबादी का 0.027 है। इनकी जनसंख्या वितरण में काफी असमानताएँ हैं झारखण्ड में पूर्वी सिंहभूम में सबसे अधिक सबर निवास करते हैं इनके सामाजिक और आर्थिक स्थित काफी दयनीय है। [9]

प्रस्तावित शोध में शोधकर्ता झारखण्ड के सबर जनजाति की सामाजिक और आर्थिक विकास के सन्दर्भ में विश्लेषण का प्रयास करेगा जो जनगणना निर्माताओं, योजना निर्माताओं, आदि के लिए उपयोगी होगा और मानव कल्याण के लिए उन्हें सबर आदिम जनजाति के विकास से सम्बंधित जानकारी उपलब्ध करने में महत्पूर्ण साबित होगा तथा वर्तमान समय में अधिकांश जनजातियां वैश्वीकरण की होड़ में अपनी संस्कृति को उपेक्षित कर रहे हैं। उनमे से एक सबर जनजाति भी हैं। प्रस्तावित शोध सबर समाज की अपनी संस्कृति और रहन-सहन को संरक्षित रखने में सहायक सिद्ध होगा ।

11. वर्तमान (मौजूदा) ज्ञान में योगदान :

वर्तमान समय में सबर जनजाति की सामाजिक और आर्थिक स्थिति की उपेक्षा का मूल कारण जानना जरुरी है, जिससे उनकी गिरती जनसंख्या के मूल कारणों का पहचान हो सकेगा। शोधकर्ता उनकी उपेक्षा के मूल कारणों से सम्बंधित आंकड़ा इकट्ठा करेगा जिससे सरकार को योजना के क्रियान्वन में सुलभता होगी।

12. भविष्य का कार्य :

इस शोध के माध्यम से भविष्य में निम्नलिखित शोध कार्य किए जा सकते हैं :

i) सन 2000 ईस्वी के बाद सबर आदिम जनजाति की सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन के क्षेत्र में

ii) वर्तमान समय में सबर आदिम जनजाति में व्याप्त गरीबी के सम्बन्ध में

iii) सबर आदिम जनजाति की शैक्षणिक इस्थिति के अध्ययन के सम्बन्ध में

iv) उनकी घटती आबादी के सम्बन्ध में

13. सम्बंधित सन्दर्भ:

1. कुमार डॉ. प्रकाश (2006), झारखण्ड की जनजाति, सत्यम प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ट (p-12)

2. पाण्डेय डॉ. शत्रुधन कुमार (2012), झारखण्ड के इतिहास और संस्कृतिय साहित्य भवन प्रकाशन, पटना, पृष्ट संख्या (pp-5-7)

3. माहली सामू (2015), पूर्वी सिंहभूम में सामाजिक और सांस्कृतिक पर नगरीकरण का प्रभाव का एक अध्ययन, अप्रकाशित, पृष्ट (p-10)

4. हुसैन माजिद (2010), मानव भूगोल, संवत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृष्ट संख्या (pp-13-19)

5. तिवारी राम कुमार (2011), झारखण्ड की रुपरेखा, शिवंगन पुब्लिकेशन, रांची, पृष्ट संख्या (pp-51-81)

6. महतो बी. के. (2004), झारखण्ड का प्रादेशिक भूगोल, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, पृष्ट (p-71)